Roll No. : .....

Total No. of Questions : **3**] [Total No. of Printed Pages : **3**

AFMA–148

M.A. (Final) Examination, 2023

SANSKRIT

वर्ग आ

Paper - IX

(वैदिक धर्म का तुलनात्मक विवेचन एवं देवशास्त्र)

*Time : **3** Hours*] [*Maximum Marks : **100***

खण्ड–अ **(अंक : 2 × 10 = 20)**

नोट :– सभी **दस** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **50** शब्द)। प्रत्येक प्रश्न **2** अंक का है।

खण्ड–ब **(अंक : 8 × 5 = 40)**

नोट :– सात में से किन्हीं **पाँच** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **200** शब्द)। प्रत्येक प्रश्न **8** अंक का है।

खण्ड–स **(अंक : 20 × 2 = 40)**

नोट :– चार में से किन्हीं **दो** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **500** शब्द)। प्रत्येक प्रश्न **20** अंक का है।

खण्ड–अ

1. अधोलिखितेषु प्रश्नेषु सर्वेषां प्रश्नानामुत्तराणि पञ्चदशाधिक शब्देषु देयानि।

   (i) यास्कमते वैदिकमन्त्राणां कतिभेदाः ? स्पष्टं कुरुत।

   (ii) वैदिक छन्दानां निर्वचनं प्रकाराञ्च प्रतिपादयत।

(iii) मूर्त देवानां परिचयं लिखत।

(iv) इन्द्र देवस्य स्वरूपं लिखत।

(v) महर्षेः अरविन्दस्य वेदव्याख्यापद्धत्याः विशेषता प्रतिपादयत।

(vi) पं. मधुसूदन ओझामहाभागस्य वेदव्याख्यापद्धत्याः साररूपेण विशेषताः प्रतिपादनीया।

(vii) अन्तरिक्षस्थानीय देवानां वैशिष्ट्यं लिखत।

(viii) 'बृहद्देवतारीत्या सूक्तस्य प्रधानदेवता कः' ? निरूपयत।

(ix) शौनकमते देवानां नामगणना प्रतिपादयत।

(x) दयानन्दमते 'मुक्तिविषयः'—इत्यस्य व्याख्या विधेया।

खण्ड–ब

2. अधोलिखितप्रश्नेषु केषाञ्चित् **पञ्च**प्रश्नानामुत्तरं द्विशतशब्देषु देयम्।

(क) ''वैदिकधर्मः सर्वधर्माणां मूलमस्ति''—कथनं विवेच्यताम्।

(ख) वेदानां व्यापकता विषये दयानन्दमतं प्रतिपाद्यताम्।

(ग) महीधराचार्यस्य परिचयः मन्त्रव्याख्यापद्धतिश्च निरूपयत।

(घ) विश्वोत्पत्तिविषये वैदिकावधारणायाः वर्णनं कुरुत।

(ङ) सिखमते वैदिकधर्मस्य प्रभावः प्रतिपादनीयः।

(च) अधोलिखित श्लोकस्य सप्रसङ्ग व्याख्या करणीया—

अर्थमिच्छन्नृषिर्देवं यं यमाहायमस्त्विति।

प्राधान्येन स्तुवन्भक्त्या मन्त्रस्तद्देव एव सः॥

अथवा

शब्देनोच्चरितेनेह येन द्रव्यं प्रतीयते।

तदक्षरविधौ युक्तं नामेत्याहुर्मनीषिणः॥

(छ) अधोलिखित श्लोकस्य सप्रसङ्ग व्याख्या करणीया—

गायत्री चैकविंशश्च यच्च साम रथंतरम्।

साध्याः साम च वैराजम् आप्त्याश्च वसुभिः सह॥

अथवा

एतासां देवतानां तु नामधेयानुकीर्तनैः।

यस्य यस्येह यावन्ति न व्यवस्यन्त्यतोऽन्यथा॥

खण्ड–स

3. अधोलिखितेषु प्रश्नेषु **द्वयोः** प्रश्नयो उत्तराणि पञ्चशत परिमित शब्दैः खलु देयानि—

(क) महर्षियास्कस्य वेदव्याख्यापद्धतिः सप्रमाणं प्रतिपादयत।

(ख) बहुदेववादविषये वैदिकविचारधारायाः विवेचनं प्रतिपाद्यताम्।

(ग) बृहद्देवतारीत्या नामानामुत्पत्तिः वर्गीकरणञ्च प्रतिपादयत।

(घ) हिन्दुबौद्धधर्मयोः तुलनात्मकता विवेचनीया।